||खण्ड-ख (व्याकरण, अनुवाद तथा रचना)||

1 माहेश्वर सूत्र एवं वर्णों का उच्चारण-स्थान

[भाषा-शिक्षा हेतु व्याकरणशास्त्र के अध्ययन को अपूर्व साधन माना गया है। भाषा में अनेक ध्वनियाँ होती हैं। इन ध्वनियों के प्रतीक को वर्ण कहते हैं। अनेक वर्णों के मिलने पर शब्द बनता है और अनेक शब्दों के मिलने पर भाषा। भाषा को नियन्त्रित करने के लिए ही व्याकरण के नियम बनाये गये हैं। संस्कृत हमारे विश्व की सर्वाधिक समृद्ध और प्राचीनतम् भाषा है। संस्कृत भाषा का व्याकरण अति वैज्ञानिक है।]

संस्कृत व्याकरण को माहेश्वरशास्त्र कहा जाता है। माहेश्वर का अर्थ है– शिवजी। पाणिनि की उपासना से प्रसन्न होकर शिवजी ने १४ बार अपना डमरू बजाया, उससे जो ध्वनि निकली, वह चौदह सूत्रों के रूप में है। १४ माहेश्वर सूत्र निम्नलिखित हैं–

१- अइउण्, **२-** ऋऌक्, **३-** एओङ्, **४-** ऐऔच्, **५-** हयवरट्, **६-** लण्, **७-** ञमङणनम्, **८-** झभञ्, **९-** घढधष्, **१०-** जबगडदश्, **११-** खफछठथचटतव्, **१२-** कपय्, **१३-** शषसर्, **१४-** हल्,

अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ ये नौ वर्ण स्वर हैं। शेष ३३ व्यंजन हैं।

वर्ण एवं प्रत्याहार

वर्ण-विचार

वर्ण का अर्थ है–अक्षर अथवा ध्वनि। मुख से निकली हुई उस छोटी से छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसका विभाग न हो सके। जैसे–अ, इ, उ, क्, च्, ट्, त् इत्यादि।

संस्कृत में स्वर और व्यञ्जन दो प्रकार के वर्ण होते हैं–

स्वर (अच्)–जिन वर्णों के उच्चारण करने में अन्य वर्ण की सहायता न ली जाय, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर तीन प्रकार के होते हैं–(१) ह्रस्व, (२) दीर्घ, (३) प्लुत।

(१) ह्रस्व स्वर–जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये पाँच हैं–अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

(२) दीर्घ स्वर–जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। ये आठ हैं–आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

(३) प्लुत स्वर–जिस स्वर के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगे, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वर के बाद ३ का अंक बना होता है जैसे–ओ३म्।

स्वरों के ज्ञान के लिए छात्र/छात्राएँ निम्न श्लोक कंठस्थ करें–

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्।।

व्यञ्जन (हल्)–जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर की सहायता लेनी पड़े, उसे व्यञ्जन कहते हैं। व्यञ्जन चार प्रकार के माने गये हैं–स्पर्श, ऊष्म, अन्तःस्थ और संयुक्त।

(१) स्पर्श व्यञ्जन–स्पर्श व्यञ्जन वे हैं जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श होता है। इनकी संख्या २५ है–

क वर्ग– क ख ग घ ङ।
च वर्ग– च छ ज झ ञ।
ट वर्ग– ट ठ ड ढ ण।
त वर्ग– त थ द ध न।
प वर्ग– प फ ब भ म।

(२) ऊष्म व्यञ्जन–ऊष्म व्यञ्जन वे हैं, जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की रगड़ से ऊष्मा उत्पन्न होती है। इनकी संख्या ४ है– श, ष, स, ह।

(३) अन्त:स्थ व्यञ्जन–इनकी संख्या चार है– य, र, ल, व।

(४) संयुक्त व्यञ्जन–दो व्यञ्जनों के योग से बनने वाले वर्ण संयुक्त व्यञ्जन कहलाते हैं। ये तीन हैं– क्+ष = **क्ष**, त्+र = **त्र**, ज्+ञ = **ज्ञ**।

(ं) अनुस्वार–वर्ण के ऊपर लगे बिन्दु को अनुस्वार कहते हैं। जैसे–कं, नं, शं आदि।

(:) विसर्ग–वर्ण की अंतिम ध्वनि 'ह' को प्रकट करने के लिए विसर्ग (:) का प्रयोग होता है।

(ँ) अनुनासिक–क वर्ग से प वर्ग तक सभी वर्गों के अन्तिम वर्ण को अनुनासिक कहते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण करने के लिए श्वास को अंशत: नासिका से बाहर निकालना पड़ता है। ये वर्ण हैं–ङ् , ञ् , ण् , न् , म् ।

वर्णों का उच्चारण-स्थान

उच्चारण स्थान	वर्ण
• कण्ठ	अ क ख ग घ ङ ह :
• तालु	इ च छ ज झ ञ य श
• मूर्धा	ऋ ट ठ ड ढ ण र ष
• दन्त	ऌ त थ द ध न ल स
• ओष्ठ	उ प फ ब भ म
• नासिका	ञ म ङ ण न
• कण्ठ+तालु	ए ऐ
• कण्ठ+ओष्ठ	ओ औ
• दन्त+ओष्ठ	व

प्रत्याहार बनाना

जिनकी सहायता से कम-से-कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं। माहेश्वर सूत्रों में से किसी भी बिना हलन्त वाले वर्ण का पहला अक्षर ले लें और किसी हलन्त वर्ण का दूसरा अक्षर ले लें। इन दो वर्णों के नाम के प्रत्याहार से बीच वाले सभी वर्णों का, जो हलन्त न हों, बोध होता है। जैसे–अइउण्, ऋऌक्, एओङ्, ऐऔच्, में से यदि अ को च से मिला दें तो अच् प्रत्याहार बनता है। अच् के अन्तर्गत अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ सभी स्वर आ जाते हैं। इस तरह हल् के अन्तर्गत सभी व्यञ्जन आते हैं।

प्रत्याहारों की संख्या ४२ है। विवरण निम्नलिखित है—

१. **अक् –** अ इ उ ऋ ऌ ।
२. **अच् –** अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ।

३. **अट्** – अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र।
४. **अण्** – अ इ उ।
५. **अण्** – अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल।
६. **अम्** – अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न।
७. **अल्** – अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
८. **अश्** – अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
९. **इक्** – इ उ ऋ ऌ।
१०. **इच्** – इ ऊ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ।
११. **इण्** – इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल।
१२. **उक्** – उ ऋ ऌ।
१३. **एङ्** – ए ओ।
१४. **एच्** – ए ओ ऐ औ।
१५. **ऐच्** – ऐ औ।
१६. **खय्** – ख फ छ ठ थ च ट त क प।
१७. **खर्** – ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।
१८. **ङम्** – ङ ण न।
१९. **चय्** – च ट त क प।
२०. **चर्** – च ट त क प श ष स।
२१. **छव्** – छ ठ थ च ट त।
२२. **जश्** – ज ब ग ड द।
२३. **झय्** – झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।
२४. **झर्** – झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।
२५. **झल्** – झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
२६. **झश्** – झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
२७. **झष्** – झ भ घ ढ ध।
२८. **बश्** – ब ग ड द।
२९. **भष्** – भ घ ढ ध।
३०. **मय्** – म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।
३१. **यञ्** – य व र ल ञ म ङ ण न झ भ।
३२. **यण्** – य व र ल।
३३. **यम्** – य व र ल ञ म ङ ण न।
३४. **यय्** – य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।
३५. **यर्** – य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।
३६. **रल्** – र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
३७. **वल्** – व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष ह।

३८. **वश्** – व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

३९. **शर्** – श ष स।

४०. **शल्** – श ष स ह।

४१. **हल्** – ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

४२. **हश्** – ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है। आभ्यन्तर और बाह्य। आभ्यन्तर से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो ध्वनि निकलने से पहले मुख के अन्दर होता है। बाह्य प्रयत्न मुख से वर्ण के निकलते समय होता है।

(क) आभ्यन्तर प्रयत्न– यह प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है–

१. स्पृष्ट– इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें स्पर्श वर्ण कहते हैं। इसमें क से म तक के वर्ण आते हैं।

२. ईषत्-स्पृष्ट– इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोड़ा स्पर्श करती है। इसमें य र ल व वर्ण आते हैं।

३. विवृत– यह प्रयत्न स्वरों का है। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पड़ता है।

४. ईषत्-विवृत– इसमें जिह्वा को कम उठाना पड़ता है। इसमें श ष स ह वर्ण आते हैं।

५. संवृत– इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है, यह केवल 'अ' स्वर में प्रयुक्त होता है।

(ख) बाह्य प्रयत्न– उच्चारण की उस चेष्टा को बाह्य प्रयत्न कहते हैं, जो मुख से वर्ण निकलते समय होती है। यह ११ प्रकार का होता है—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और त्वरित।

अभ्यास-प्रश्न

(क) **१.** अ, च, ब में से किसी **एक** का उच्चारण-स्थान लिखिए।

२. तालु से किन वर्णों का उच्चारण होता है?

३. त और थ का उच्चारण किस स्थान से होता है?

४. कण्ठ से किन वर्णों का उच्चारण होता है?

५. माहेश्वर सूत्रों की संख्या कितनी है?

६. अन्तःस्थ के अन्तर्गत कितने वर्ण आते हैं?

७. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
अ, ङ, व

८. निम्नलिखित में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
ठ, त, प

९. अच्, हल्, चर् में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों का उल्लेख कीजिए।

१०. इ, ट, क में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए।

११. इक्, जश्, यण् में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए।

१२. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए—
:(विसर्ग), इ, न।

१३. उ, ए, ऋ में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए।

१४. हल्, इक्, उक्, में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए।

१५. प्रत्याहार किसे कहते हैं?

१६. स्वरों के उच्चारण में कौन-सा प्रयत्न होता है?

१७. नासिका के सहारे किन वर्णों का उच्चारण होता है?

१८. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
उ, ग, त

१९. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
इ, ब, र

२०. निम्नलिखित प्रत्याहारों में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण लिखिए–
अक, एच्, झष्

२१. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
अ, ठ, य

२२. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
अ, ज, ष

२३. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
श्, ष्, स्

२४. निम्नलिखित प्रत्याहारों में से किसी **एक** के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए–
अच्, यण् , एङ्

२५. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** का उच्चारण स्थान लिखिए–
इ ऋ ऌ

२६. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
उ, ख, ध

२७. निम्नलिखित प्रत्याहारों में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए–
अक्, खर्, इक्

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के चार विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प को चुनकर लिखिए :

१. 'अण्' प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन-कौन से वर्ण आते हैं?
(अ) अ, न **(ब)** अ, इ, उ **(स)** अ, य **(द)** मात्र अ वर्ण।

२. न एवं ण का उच्चारण स्थान है–
(अ) दन्त **(ब)** कण्ठ **(स)** नासिका **(द)** ओष्ठ।

३. जश् प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन-कौन से वर्ण आते हैं–
(अ) ङ, ण, न **(ब)** ज, ब, ग, ड, द **(स)** ज, ब, प, न **(द)** ज, भ, ग, ड।

४. एच् प्रत्याहार में वर्ण होते हैं–
(अ) ए ओ ऐ औ **(ब)** ए ओ ऐ औ ह य व र **(स)** ए ओ **(द)** ए ओ ङ ऐ औ च्।

५. इक् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण हैं–

(अ) इ, उ, ण, ऌ (ब) अ, इ, उ, ण (स) इ, उ, ऋ, ऌ (द) इ, उ, ऋ, क् ।

६. शर् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण हैं–

(अ) श ष स (ब) च ट त व श (स) श ष स ह (द) श ष ।

७. अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण हैं–

(अ) इ उ ऋ ऌ (ब) अ इ उ ऋ ऌ (स) अ इ उ ण ऋ ऌ क् (द) अ इ उ ऋ ऌ क।

८. यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण हैं–

(अ) ह य व र (ब) य व र ल (स) व र ल (द) ह य व।

९. 'चर' प्रत्याहार के अन्तर्गत आनेवाले वर्ण हैं–

(अ) श, ष, स, ह (ब) ज, ब, ग, ड, द (स) च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स् (द) य्, व्, र्, ल्।

१०. झश् प्रत्याहार के अन्तर्गत आनेवाले वर्ण हैं–

(अ) झ, भ, घ, ढ, ध (ब) झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द

(स) झ, भ, घ, ढ, ध (द) झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ।

११. अङ् प्रत्याहार के अन्तर्गत आनेवाले वर्ण हैं–

(अ) अ, इ, उ (ब) अ, इ, उ, ऋ, ऌ (स) अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ (द) ए ओ।

१२. माहेश्वर सूत्रों की संख्या है–

(अ) चौबीस (ब) चौदह (स) बारह (द) पाँच।

(ग) निम्न में शुद्ध वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. अ और क् का उच्चारण स्थान एक नहीं है। ( )

२. च् वर्ण का उच्चारण स्थान तालु है। ( )

३. प् वर्ण का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है। ( )

४. ल् और स् का उच्चारण दाँतों के सहारे होता है। ( )

५. मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्णों में ठ् ड् और र् है। ( )

६. इ और य् का उच्चारण स्थान एक है। ( )

●●●